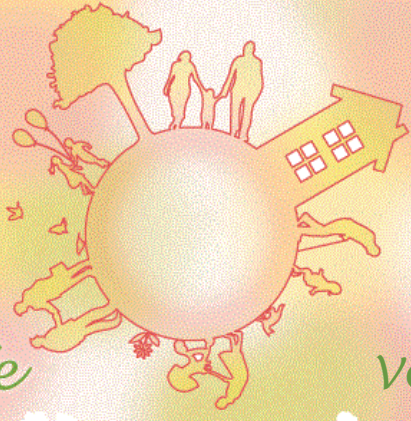


Living the LOTUS

Buddhism in Everyday Life

1
2020

VOL. 172



Founder's Essay

बुद्ध पुत्र के रूप में अपने स्व के प्रति जागरूकता

हम साधारण शब्दों में “बुद्ध-प्रकृति को प्रकट करने” की बात करते हैं, लेकिन हम वास्तव में अपने स्वयं के बुद्ध-स्वभाव को प्रकट करने के लिए क्या कर सकते हैं?

सबसे पहले, हमें अपने आप को “मैं बुद्ध पुत्र हूँ” तब तक बताना होगा जब तक हम पूरी तरह से आश्वस्त नहीं हो जाते। फिर, एक बार जब हम आश्वस्त हो जाते हैं, हम अब सुस्त नहीं पड़ेंगे, चीजों के प्रति अप्रसन्नता प्रकट नहीं करेंगे, अपना आपा नहीं खोयेंगे, और इसी तरह।

किसी मनोवैज्ञानिक का कहना है कि, “अच्छे परिणामों की कल्पना करने से अच्छे परिणाम सामने आते हैं, जबकि बुरे परिणामों की कल्पना करने से बुरे परिणाम सामने आते हैं। अवचेतन मन उन अवसरों को पकड़ लेता है, जो उस परिणाम की ओर ले जाता है, जिसकी हम कल्पना करते हैं।”

छाया सम्बन्धी रोगों के इलाज के मोरीता थेरेपी पद्धति के संस्थापक, मोरीता मासाताके (1874-1938), ने भी कहा है, “यदि आप अपने बाहरी स्वरूप को ठीक करते हैं, तो आपकी आंतरिक स्थिति स्वाभाविक रूप से परिपक्व होगी।” बस अपने कपड़ों को करीने से सजाकर स्वयं को गरिमा के साथ ले जाना है, आप स्वयं को अनुचित चीजें करने में असमर्थ पायेंगे।

जब आप इस बात से अवगत हैं कि “मैं बुद्ध पुत्र हूँ!” कोई बात नहीं, अन्य लोग जो भी अनुचित बातें कहते हैं, आप उनपर मुस्कुराएँगे। आप उनके साथ दयालु हृदय के साथ व्यवहार कर पायेंगे, और चाहेंगे कि वे भी बुद्ध की देशनाओं को समझें।

निक्क्यो निवानो, काइसो जुइकान 9
(कोसेइ प्रकाशन, 1997), पीपी। 208-9

Living the Lotus Vol. 172 (January 2020)

Senior Editor: Koichi Saito
Editor: Kensuke Osada
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly
by Rishso Kosei-kai International,
Fumon Media Center, 2-7-1 Wada,
Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एवं कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

“लिविंग द लोटस: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

अपने सच्चे स्व पर लौटना

श्रद्धेय निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट रिशशो कोसेइ काइ



आप यह वर्ष कैसे बितायेंगे

नववर्ष की शुभकामनायें! यहाँ इस मौसम के लिए पूर्णतया उपयुक्त एक कविता है:

हालाँकि एक वर्ष समय की आकारहीन अवधि है, यह मेरे सामने बेशुमार फैलता है।
—सतारो सातो

नव वर्ष का स्वागत करते ही हमारे सामने समय की एक अभिनव अवधि का समृद्ध विस्तार खुलता है। इस संबंध में, कोई और नहीं बल्कि हम स्वयं इस आने वाले वर्ष को वास्तव में समृद्ध और पुरस्कृत कर सकते हैं।

ऐसा इसलिए है कि हम हमेशा सभी लोगों और वस्तुओं के साथ रोजमर्रे के टकराव का कारण और परिस्थिति हैं। अलग तरीके से कहें तो, हम स्वीकार कर सकते हैं कि किसी का अस्तित्व नहीं है-यहाँ तक कि संसार में होने वाली घटनाएँ-जिनसे हम जुड़े नहीं हैं, तो हम कह सकते हैं कि हमारे पास जो भी वर्ष है वह पूरी तरह से हमारे ऊपर है।

इसका अर्थ है कि आप यह विचार करें कि आप कैसे बढ़ेंगे और आने वाले वर्ष के दौरान प्रगति करेंगे। पुण्डरीक सूत्र के परिवर्त-9: शैक्ष्यों एवं अशैक्ष्यों को आश्वासन, में शाक्यमुनि का इकलौता पुत्र राहुल, साथ ही साथ उनके सदा परिचर रहे आनंद को यह आश्वासन मिलता है कि वे भी, निश्चित रूप से बुद्ध होंगे। जब शाक्यमुनि ने राहुल को अपना आश्वासन दिया, तो उन्होंने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा कि “राहुल की अनदिखी अभ्यासों केवल मुझे मालूम हैं।” बौद्ध विद्वान फुमियो मासुतानी (1902-87) ने लिखा है कि जबकि राहुल शारिपुत्र की बुद्धिमता या पूर्ण की वाग्मिता के धनी नहीं थे, परन्तु उन्होंने स्वयं को अभ्यासकर्ता के रूप में पूर्ण रूप से सिद्धहस्त किया और “अनदिखे” अभ्यासों को करने वाले थे अर्थात् उन्होंने अपने एवं अपने श्रमसाध्य परिश्रम के अनवरत समर्थकों के सहयोग से संघ का संरक्षण किया, उसे सुनियमित रखा।

मुझे लगता है कि मैं अकेला नहीं हूँ, जो राहुल के प्रति सहानुभूति रखता है। शारिपुत्र को ज्ञान के अधिष्ठाता के रूप में और पूर्ण को वाग्मिता के धनी के रूप में सम्मान प्राप्त है, इसके विपरीत, राहुल किसी विशेष प्रतिभा के धनी नहीं थे। इसलिए, यह सोचकर कि हम कैसे स्वयं को विकसित और प्रगति कर सकते हैं, हमें उस तरह के प्रयास पर ध्यान देना चाहिए, जैसा कि राहुल ने किया था।





सच्चाई से, विनम्रतापूर्वक

शाक्यमुनि के महापरिषद में, किसी की आयु और सांसारिक सामाजिक स्थिति अप्रासंगिक थी। इसके बजाय, जिन लोगों ने सांसारिक जीवन को सबसे पहले त्याग दिया, उन्हें वरिष्ठता दी गई और धार्मिक प्रथाओं के लिए आरक्षित मंदिर के कक्षों में पहले प्रवेश करने की अनुमति दी गई।

एक समय, शाक्यमुनि और राहुल जेतवन विहार में ठहरे हुए थे। राहुल अपने कुछ वरिष्ठ सांसारिक जीवन त्यागनेवाले के पूर्व ही विहार में पहुँच गए और तुरंत उनके कमरे को अन्य को दे दिया गया, जिसमें उनके लिए कोई कमरा नहीं बचा था। उनके करने के लिए कुछ भी नहीं था, वे मात्र शाक्यमुनि के कमरे के प्रवेश द्वार से पहले सो गये।

यह भी अंकित है कि एक समय एक व्यक्ति ने, जो जानता था कि राहुल शाक्यमुनि के पुत्र हैं, उनके भिक्षा-पात्र में रेत फेंक दिया और उनके सिर पर प्रहार किया। फिर भी, राहुल ने चुपचाप इस तरह के दुर्व्यवहार को सहन किया।

राहुल की प्रशंसा “अनदिखी अभ्यासों में सबसे अग्रणी” के रूप में की जाती है। हालाँकि, मुझे लगता है कि उनकी ऐसी प्रशंसा की गई थी, क्योंकि उन्होंने शारिपुत्र सहित अपने अनेक वरिष्ठों द्वारा दिए गए मार्गदर्शन और परामर्श को नम्रतापूर्वक सुना था, इनके लिए विनम्र थे, और देशना को सीखना और दृढ़ता से अभ्यास करना जारी रखा, जब दूसरों को दिख नहीं रहा था, तब भी। जन्म से वे शाक्यमुनि के ज्येष्ठ एवं एकमात्र पुत्र थे और इससे पहले कि वे संसार का त्याग करें, उन्होंने पिता शाक्यमुनि से इच्छा प्रकट की कि “कृपया मुझे राजमहल की संपत्ति दे दें” परन्तु भिक्षु बनने के उपरान्त, वे समझ गये कि जीवन में सबसे महत्वपूर्ण धर्म का पालन करते रहना है, वे मन की सत्यनिष्ठा और विनम्रता से सदा के लिए विनीत हो गये। शांतभाव से परिश्रम के संचय का यह दृष्टिकोण-यह “अलक्षित अभ्यास”-राहुल का महाप्रयास है।

राहुल के प्रयासों में, धन का कोई लोभ नहीं, व्यक्तिगत परिस्थितियों से नाराजगी, या शाक्यमुनि के पुत्र होने का अहंकार नहीं था। अपनी “अनदिखी अभ्यासों” को संचित करके, राहुल सभी लोगों में निहित बुद्ध-प्रकृति की अनमोलता के प्रति जागृत हो गये, जिसने उन्हें लालच, क्रोध और अज्ञान के भ्रम से मुक्त करा दिया। वह अपने असली स्व में लौट आए।

कोई अन्तर नहीं आता कि आप कौन हैं, आप अपने असल स्व पर लौट सकते हैं। अपनी विनम्रता और विनयप्रायणता को कभी न भूलें और हर दिन ऐसे जिँ जैसे कि यह हमारा आखिरी दिन है, इस वर्ष को व्यतीत करने के लिए संभवतः कोशिश करें।

कोसेइ, जनवरी 2020



समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः

प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं मुख्य बिन्दुयें

सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र अध्याय 12: देवदत्त (2)

इच्छायें अच्छी और बुरी हो सकती हैं

मानव प्राणियों में शारीरिक और मानसिक इच्छायें सामान्य रूप से हैं। अभ्यास में संलग्न भिक्षु या भिक्षुणी अपने को सांसारिक इच्छाओं से पूरी तरह से अलग करने का प्रयास करें, परन्तु सामान्य जीवन जीने वाले गृहस्थों के लिए ऐसा करना एकदम असंभव है। ऐसा कुछ भी करना जिसे नहीं किया जा सकता है, प्रकृति के विरुद्ध जाता है, इसलिए सामान्य लोगों को इन सांसारिक इच्छाओं से अलग रहने के बजाय, उनको अनुकूल दिशाओं में मोड़ने की शिक्षा दी जाती है। यह महायान का तरीका है। उदाहरण के लिए, अगर पैसा बनाने की इच्छा को समाज के काम में लगाया जा सकता है, तो पैसा बनाना अच्छा करने की उर्जा बन सकता है।

जैसा कि हमने पहले भाग में देखा है, देवदत्त ने अपनी इच्छाओं को कार्य रूप में बदल दिया, जो बुरा था। परन्तु महायान देशना में, यदि इच्छा को अच्छे कार्य की ओर मोड़ दिया जाए, तो यह अच्छे के लिए कार्य कर सकता है। बुरे व्यक्ति और अच्छे व्यक्ति के बीच का यह महत्वपूर्ण अंतर है। यदि देवदत्त ने अपनी इच्छाओं को मार्ग के अभ्यास के माध्यम से भलाई की ओर मोड़ दिया होता, तो उसकी गलत सोच अच्छे कार्य करने की उर्जा में बदल गई होती और उसे बुद्ध बनने में मदद मिलती। यह दूसरी शिक्षा है जिसे हम इस परिवर्त के पहले भाग में सीखते हैं। (इस परिवर्त के पहले भाग से पहली शिक्षा शाक्यमुनि के प्रति कृतज्ञता की अटूट भावना के बारे में थी: अच्छी और बुरी सभी चीजों को, गहन ज्ञान के कारण के रूप में देखना चाहिए, जिसके लिए हम आभारी हो सकते हैं।)

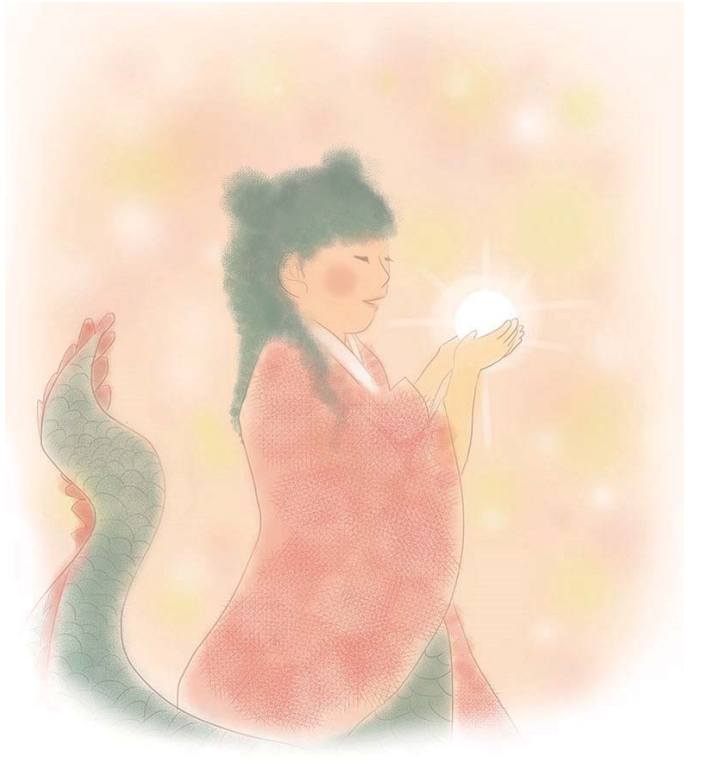
अब हम परिवर्त के अंतिम भाग की ओर मुड़ते हैं।

बोधिसत्व ज्ञानकोष ने मंजुश्री को बधाई दी, जो सागरनागराज के सागरतल में स्थित महल से वापस आए हैं और जहाँ उन्होंने देशना का प्रचार प्रसार किया है। बोधिसत्व ज्ञानकोष ने बोधिसत्व मंजुश्री के गुणों की प्रशंसा की है और उनसे पूछा कि वे किसका उपदेश कर रहे हैं। मंजुश्री ने कहा कि उन्होंने केवल सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र को ही प्रतिपादित किया है। बोधिसत्व ज्ञानकोष ने पुनः पूछा कि क्या कोई है जिसने इस देशना का अनुसरण कर बुद्धत्व प्राप्त करने को है। मंजुश्री का उत्तर था कि वास्तव में एक व्यक्ति है: नागराज की आठ वर्षीया पुत्री। इससे पहले कि उन्होंने बोलना

समाप्त किया, नागराज की पुत्री अचानक प्रकट होती है और शाक्यमुनि के सामने श्रद्धापूर्वक झुकती है।

इस पर, शारिपुत्र ने कन्या को बताया कि बुद्ध के सम्बोधिज्ञान को केवल शीलवर्तों के निरन्तर अभ्यास करने, अच्छे कर्मों का संचय करने और असंख्य कल्पों तक छः पारमिताओं का पूर्ण रूप से अभ्यास करने के उपरान्त ही प्राप्त किया जा सकता है, और इसे पूरा करने के लिए स्त्री शरीर में बहुत अधिक बाधाएँ हैं।

बिना कोई प्रत्योत्तर दिए ही, कन्या ने एक बहुमूल्य हार बुद्ध को अर्पित किया, जो त्रिसहस्रमहासहस्रगुणा लोकों के मूल्य के समान था। बुद्ध ने उसके उपहार को तत्क्षण स्वीकार किया। नागकन्या फिर ज्ञानकोष और शारिपुत्र को बताती है कि बुद्ध के रत्नहार को स्वीकारने की तुलना में वह स्वयं उपेक्षाकृत तेजी से बुद्ध बन जाएगी। फिर वह एक पुरुष में बदल जाती है और दक्षिण भाग के विशुद्ध एवं निर्मल क्षेत्र में चली जाती है, जहाँ वह सम्यक सम्बोधि ज्ञान प्राप्त करती है तथा पुण्डरीक सूत्र को प्रकाशित करती है, जो सभी एक पल में हो जाता है।





इस दृश्य को देखते ही ज्ञानकोष, शारिपुत्र, और सम्पूर्ण महापरिषद बहुत भावित हुए और इस अवसर को अपने हृदय की गहराई से अनमोल सच्चाई के रूप में स्वीकार किया। अब यहाँ से यह परिवर्त समाप्त होता है।

स्त्रियों का बुद्धत्व

पूरे इतिहास में स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोण कई देशों में एक जैसे रहा है, परन्तु प्राचीन भारत में यह चुनौतीपूर्ण धारणा थी कि स्त्रियाँ पुरुषों से बहुत हीन होती हैं। इसके अतिरिक्त, यह माना जाता था कि स्त्री शरीर बुराइयों से भरा हुआ है, और इस कारण से स्त्रियों का उद्धार संभव नहीं है।

हमने अभी जिस उद्धारण का विश्लेषण किया है, जिससे पता चलता है कि स्त्री अपने मानव रूप में सर्वोच्च अवस्था को प्राप्त कर सकती है और बुद्ध बन सकती है, यह पृथ्वी को हिला देने वाली घोषणा थी। यह माना जाता है कि सम्पूर्ण इतिहास में, यह पुरुषों और स्त्रियों की समानता के लिए सबसे पहला आह्वान था।

पुरुषों और स्त्रियों में जन्मजात अंतर है-शारीरिक रूप से आकार और कार्य, प्रजनन में उनकी भूमिका और चीजों को देखने के तरीके की शक्तियाँ और कमजोरियाँ। परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि पुरुषों और स्त्रियों की सच्ची समानता का तभी अहसास होता है, जब हम, रूप और कार्यों में अंतर के बावजूद, अपनी जन्मजात विशेषताओं का अधिकतम लाभ उठाते हैं और घर और समाज को सुव्यवस्थित बनाने में सहयोग करते हैं। यह पुरुष और स्त्री की समानता का नैतिक और सामाजिक आधार है।

इसे बौद्धिक रूप से समझा जा सकता है, परन्तु जिस समय पुण्डरीक सूत्र लिखा गया था, उस समय भी लोगों ने हृदय की गहराई में स्त्रियों को नीचा समझना पाल रखा था और वह विचार आसानी से हिलाया नहीं जा सकता था। इसके बाद शाक्यमुनि ने इसे स्पष्ट करने के लिए एक कदम आगे बढ़ाया कि सभी मानव प्राणी समान हैं और उन्हें सर्वोच्च आश्वासन दिया कि स्त्री और पुरुष दोनों ही बुद्धत्व प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार यह विचार लिखित रूप में आया कि सभी लोग, किसी लिंग के भेद के बिना, आंतरिक रूप से एक ही बुद्ध-स्वभाव से अन्तर्निहित हैं।



किसी को आपत्ति हो सकती है कि सूत्र के पाठ में नागकन्या अपने स्त्री रूप में बुद्ध नहीं बनती है, बल्कि बुद्ध बनने के लिए एक पुरुष में बदल जाती है। लेकिन अगर हम इस समय के परिपेक्ष्य में भारतीय लोगों के मनोविज्ञान पर विचार करते हैं, तो इस बात को आसानी से समझा जा सकता है। कन्या को एक पुरुष में बदलना बुद्ध बनने की नाटकीय अभिव्यक्ति है। जिस महापरिषद में स्त्रियों को नीचा देखने का भाव विद्यमान था, उससे सभी लोग बहुत प्रभावित थे। यह इस अर्थ को समझने के लिए बनाई गई थी। परन्तु हमें इस पर ध्यान नहीं देना चाहिए।

विश्वास की शक्ति की महानता

पहले तो, शारिपुत्र को भी विश्वास नहीं था कि नागमहल की यह आठ वर्षीया कन्या तत्क्षण बुद्ध बन सकती है और इसमें हमें एक महत्वपूर्ण शिक्षा मिलती है।

आठ वर्षीया कन्या एक बच्चे के विश्वसनीय और लचीले हृदय का प्रतीक है, और नागमहल का क्षेत्र सभ्यता से बहुत दूर एक स्थान का प्रतीक है। त्रिसहस्रमहासहस्रगुणा लोक के मूल्य का रत्नहार आस्था का प्रतीक के सिवाय कुछ नहीं है।

इसलिए, यदि हम किसी बच्चे के विश्वसनीय और लचीले हृदय के साथ बुद्ध की देशना में विश्वास करते हैं, तो उस पल में हम



भावुक हो जाते हैं और बुद्ध के साथ मिलकर एक हो जाते हैं। सम्पूर्ण विश्व हमारा अपना हो जाता है। विश्वास वास्तव में त्रिसहस्रमहासहस्रगुणा लोक के मूल्य के समान है।

बुद्ध द्वारा तत्क्षण रत्नहार स्वीकारने का अर्थ है कि विश्वास के द्वारा उसके माध्यम से सीधे तत्क्षण बुद्ध के मन से जुड़ना है। इससे उत्पन्न प्रतिध्वनि बुद्धत्व का सीधा मार्ग है।

सभ्यता के विकास के साथ, लोग धार्मिक शिक्षाओं की व्याख्या और उसके अर्थ में हेरफेर केवल तर्क के आधार करते हैं। निश्चिन्त ही, इसे समझना महत्वपूर्ण है, परन्तु, अकेले तर्क मन को विशिष्ट मोड़ देने में समर्थ नहीं है, जो मन की गहराई में अचानक जागृत होता है। नागमहल की आठ वर्षीया कन्या पर्याप्त शिक्षा से सुसज्जित नहीं थी, परन्तु वह हृदय की निस्वार्थता और बुद्ध के प्रति गहरी आस्था के माध्यम से आत्मज्ञान की वास्तविक मानसिक स्थिति में प्रवेश करती है।

बुद्ध की देशना का अध्ययन करने के सिलसिले में हमारे लिए यह भी महत्वपूर्ण है कि, बना बनाया विचारों, निश्चित धारणाओं और जकड़नेवाली भावनाओं को छोड़ दें और स्वच्छ श्वेत पत्र के एक शीट के रूप में ग्रहणशील बनें। यह वह सबक है जिसे हमें स्त्रियों के बुद्धत्व प्राप्ति की इस कथा से निकालना चाहिए, जो इस परिवर्त से अगले परिवर्त में दिखेगा।

यह उस पाठ का हिंदी अनुवाद है जिसका जापानी मूल होक्के सानबुक्यो: काकु होन नो आरामासी तो योतेन (समेकित त्रिविध पुण्डरीकसूत्रः प्रत्येक परिवर्त का सारांश और मुख्य बिंदुएँ) में संस्थापक निक्क्यो निवानो के नाम प्रकाशित है, (कोसेइ प्रकाशन, 1991 (संशोधित संस्करण, 2016), पीपी.126-32.



आप वर्ष को कैसे बिताएंगे?

आपको नववर्ष की शुभकामनाएँ देता हूँ।

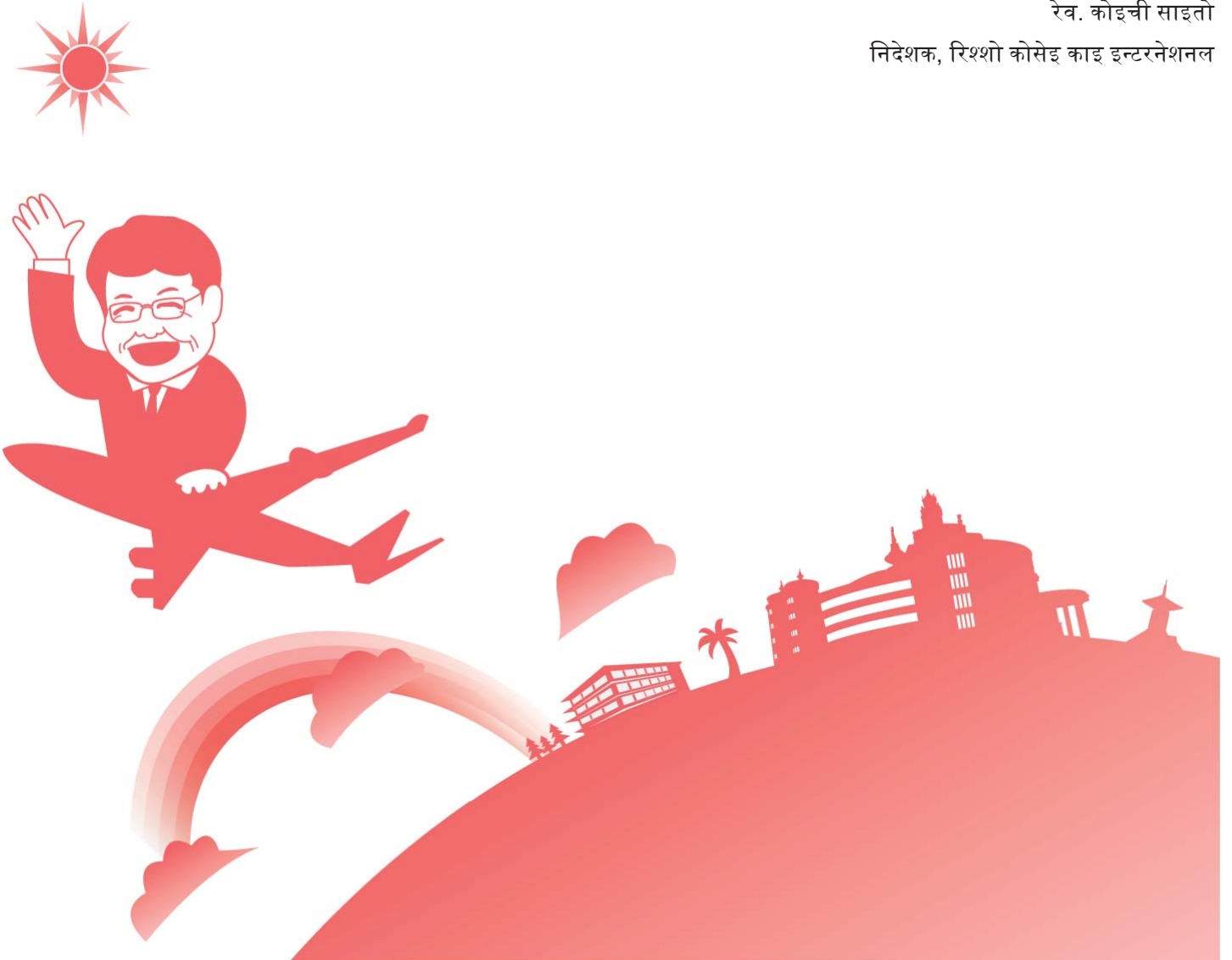
जापान में एक कहावत है कि "नववर्ष का दिन वर्ष की कुंजी है।" जैसा कि कहा जाता है, आप वर्ष का प्रारंभ कैसे करते हैं, यह निर्धारित करता है कि क्या यह केवल एक और सामान्य वर्ष होगा या एक महत्वपूर्ण वर्ष होगा।

इस माह के प्रेसिडेण्ट के संदेश में, प्रेसिडेण्ट निवानो बताते हैं कि हमारा वर्ष किस तरह का होगा, यह पूरी तरह से हमारे ऊपर है। इस संबंध में, वे हमें राहुल की अलक्षित अभ्यासों के महत्व का उल्लेख करते हैं, जो किसी विशेष प्रतिभा के धनी नहीं होते हुए भी, अपनी अचल सच्चाई और विनम्रता के साथ अभ्यास में समर्पित थे। यह देशना को निरंतर सीखने और अभ्यास करने के महत्व को दर्शाता है।

हम सभी में निहित बुद्ध-प्रकृति की अनमोलता के प्रति सजग करने और भ्रम से मुक्त अपने सच्चे स्व में लौटने के लिए, मुझे विश्वास है कि हम में से प्रत्येक व्यक्ति हर दिन हंसमुख और दयालु होने के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रयास कर सकता है, अपनी नम्रता और विनम्रता को, भूले बिना ही।

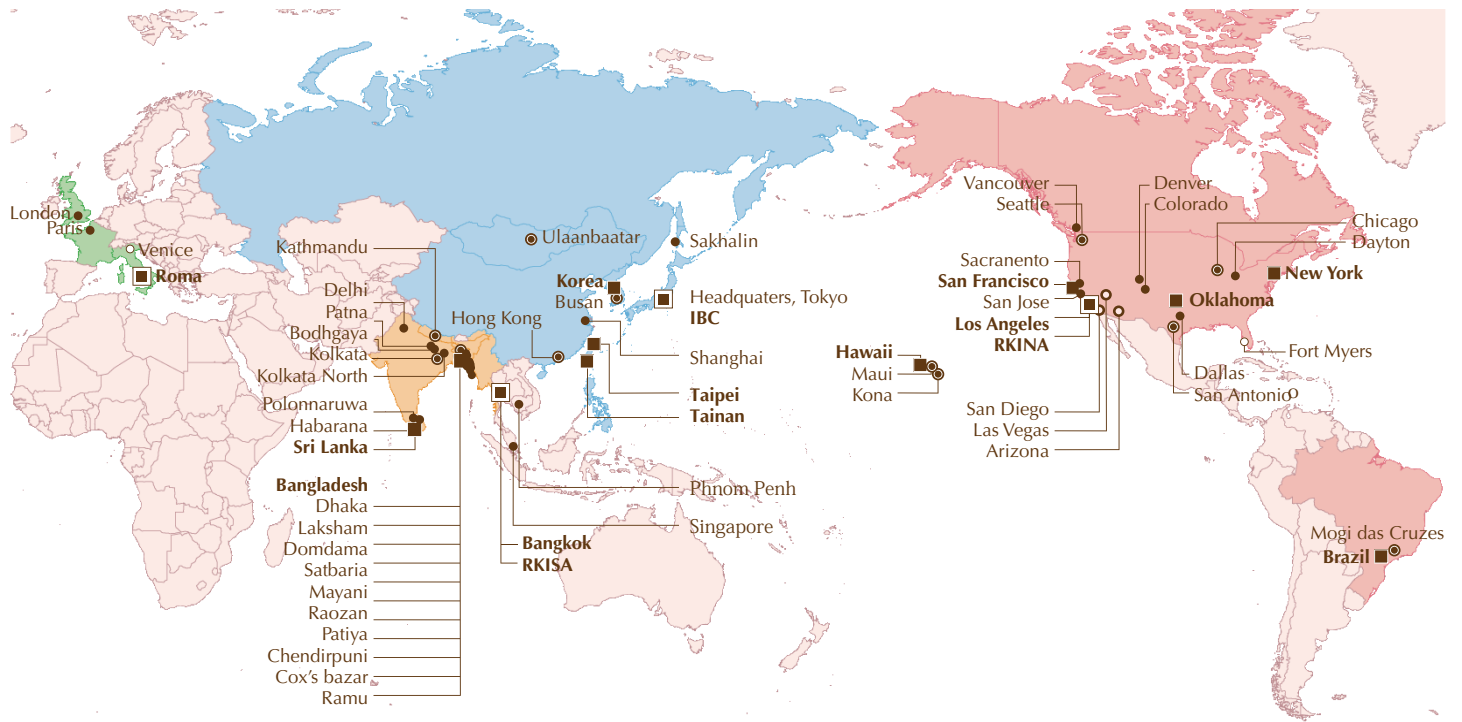
रेव. कोइची साइतो

निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इन्टरनेशनल



✉ We welcome comments on our newsletter Living the Lotus: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

Rissho Kosei-kai: A Global Buddhist Movement



Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, USA
 TEL: 1-808-455-3212 FAX: 1-808-455-4633
 Email: info@rkhawaii.org URL: <http://www.rkhawaii.org>

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center

1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, USA
 TEL: 1-808-242-6175 FAX: 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center

73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740, USA
 TEL: 1-808-325-0015 FAX: 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, USA
 POBox 33636, CA 90033, USA
 TEL: 1-323-269-4741 FAX: 1-323-269-4567
 Email: rk-la@sbcglobal.net URL: <http://www.rkina.org/losangeles.html>

Please contact Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas**

Rissho Kosei-kai of San Francisco

1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, USA
 POBox 778, Pacifica, CA 94044, USA
 TEL: 1-650-359-6951 FAX: 1-650-359-6437
 Email: info@rksf.org URL: <http://www.rksf.org>

Please contact Rissho Kosei-kai of San Francisco

- Rissho Kosei-kai of Sacramento**
- Rissho Kosei-kai of San Jose**

Rissho Kosei-kai of New York

320 East 39th Street, New York, NY 10016, USA
 TEL: 1-212-867-5677 Email: rkny39@gmail.com URL: <http://rk-ny.org>

Rissho Kosei-kai of Chicago

1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056, USA
 TEL: 1-773-842-5654
 Email: murakami4838@aol.com URL: <http://rkchi.org>

Rissho Kosei-kai of Fort Myers

URL: <http://www.rkftmyersbuddhism.org>

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma

2745 N.W. 40th St., Oklahoma City, OK 73112, USA
 POBox 57138, Oklahoma City, OK 73157, USA
 TEL: 1-405-943-5030 FAX: 1-405-943-5303
 Email: rkokdc@gmail.com URL: <http://www.rkok-dharmacenter.org>

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Denver

1255 Galapago St. #809 Denver, CO 80204, USA
 TEL: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton

617 Kling Drive, Dayton, OH 45419, USA
 URL: <http://www.rkina-dayton.com>

The Buddhist Center Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)

2707 East First St., Suite #1, Los Angeles, CA 90033, USA
 TEL: 1-323-262-4430 FAX: 1-323-262-4437
 Email: info@rkina.org URL: <http://www.rkina.org>

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio

(Address) 6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, USA
 (Mail) POBox 692042, San Antonio, TX 78269, USA
 TEL: 1-210-561-7991 FAX: 1-210-696-7745
 Email: dharmasanantonio@gmail.com
 URL: <http://www.rkina.org/sanantonio.html>

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center

28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003, USA
 TEL: 1-253-945-0024 FAX: 1-253-945-0261
 Email: rkseattlewashington@gmail.com
 URL: <http://buddhistlearningcenter.org>

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Please contact RKINA

Rissho Kosei-kai do Brasil

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP, CEP 04116-060, Brasil
 TEL: 55-11-5549-4446, 55-11-5573-8377
 Email: risho@rkk.org.br URL: <http://www.rkk.org.br>

Facebook: <https://www.facebook.com/rishokosseikaidobrasil>
Instagram: <https://www.instagram.com/rkkbrasil>

Risho Kosei-kai de Mogi das Cruzes

Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP, CEP 08730-000, Brasil

在家佛教韓國立正佼成會

〒 04420 大韓民國 SEOUL 特別市龍山區漢南大路 8 路 6-3
6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea
TEL: 82-2-796-5571 FAX: 82-2-796-1696

在家佛教韓國立正佼成會釜山支部

〒 48460 大韓民國釜山廣域市南區水營路 174, 3F
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
TEL: 82-51-643-5571 FAX: 82-51-643-5572

社團法人在家佛教立正佼成會

台灣台北市中正區衡陽路 10 號富群資訊大廈 4 樓
4F, No. 10, Hengyang Road, Jhongheng District, Taipei City 100, Taiwan
TEL: 886-2-2381-1632, 886-2-2381-1633 FAX: 886-2-2331-3433

台南市在家佛教立正佼成會

台灣台南市崇明 23 街 45 號
No. 45, Chongming 23rd Street, East District, Tainan City 701, Taiwan
TEL: 886-6-289-1478 FAX: 886-6-289-1488
Email: koseikaitainan@gmail.com

Rissho Kosei-kai South Asia Division

Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8216 FAX: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai of Kathmandu

Ward No. 3, Jhamsikhel, Sanepa-1, Lalitpur, Kathmandu, Nepal

Rissho Kosei-kai of Kolkata

E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North

AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059, West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center

Ambedkar Nagar, West Police Line Road, Rumpur, Gaya-823001,
Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Patna Dharma Center

Rissho Kosei-kai of Central Delhi

77 Basement D.D.A. Site No. 1, New Rajinder Nagar,
New Delhi 110060, India

Rissho Kosei-kai of Singapore

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh

W.C. 73, Toul Sampaov Village, Sangkat Toul Sangke, Khan Reouseykeo,
Phnom Penh, Cambodia

RKISA Rissho Kosei-kai International of South Asia

Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8141 FAX: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai of Bangkok

Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8216 FAX: 66-2-716-8218 Email: info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei Dhamma Foundation

No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
TEL: 94-11-2982406 FAX: 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa

Rissho Kosei-kai Bangladesh

85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
TEL/FAX: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai Mayani

Mayani Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Damdama

Damdama Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Patiya

China Clinic, Patiya Sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Satbaria

Village: Satbaria Bepari Para, Chandanaih, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Chendhirpuni,

Village: Chendhirpuni, P.O.: Adhunogar, P.S.: Lohagara, Chittagong,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai Dhaka

408/8 DOSH, Road No 7 (West), Baridhara, Dhaka, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Laksham

Village: Dhupchor, Laksham, Comilla, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Cox's Bazar

Ume Burmize Market, Tekpara, Sadar, Cox's Bazar, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Cox's Bazar, Ramu Shibu

Rissho Kosei-kai Raozan

Dakkhin Para, Ramzan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Buddiyskiy khram "Lotos"

4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk 693005, Russia
TEL: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai of Hong Kong

Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road, North Point, Hong Kong, China

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar

(Address) 15F Express Tower, Peace avenue, khoro-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia

(Mail) POBox 1364, Ulaanbaatar-15160, Mongolia
TEL: 976-70006960 Email: rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Erdenet

2F Ikh Mandal building, Khurenbulag bag, Bayan-Undur sum,
Orkhon province, Mongolia

Rissho Kosei-kai di Roma

Via Torino, 29, 00184 Roma, Italia
TEL/FAX: 39-06-48913949 Email: roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK

Rissho Kosei-kai of Paris

Rissho Kosei-kai of Venezia

Rissho Kosei-kai International Buddhist Congregation (IBC)

166-8537 東京都杉並区和田 2-7-1 普門メディアセンター 3F
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan
TEL: 03-5341-1230 FAX: 03-5341-1224 URL: <http://www.ibt-rk.org>